ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -13 अंक -19 जनवरी - I, 2013 (पाक्षिक) माउण्ट आबू मूल्य 7.50 रू

ओ.आर.सी.। त्रीदिवसीय अखिल भारतीय गीता वृतान्त पुनरावृत्ति महासम्मेलन का उद्घाटन दीप प्रज्जवलन करते हुए ब्र.कु. ब्रीजमोहन,ब्र.कु.उषा,सत् दर्शन साधु समाज के प्रमुख निर्मल महामण्डलेश्वर सन्त दर्शन सिंह, हरिद्वार,हिन्दु दर्शन की रिसर्च स्कॉलर डॉक्टर छाया राय, जबलपुर, बी.के. शांति,श्रीफोर्ट दिल्ली।

एक ओंकार शिव का पुन: अवतरण का समय

ओ.आर.सी, गुडगाँव । 'हम अभी कलियुग के अन्तिम चरण पर जी रहे हैं जहाँ अधर्म और अनीति अपनी चरम सीमा पर है। गीता वचन अनुसार निराकार परमपिता परमात्मा यानि एकओंकार शिव जी का एक सत्य धर्म स्थापन अर्थ पुन: अवतरण का समय है' - उक्त उद्गार हरिद्वार से पधारे सत् दर्शन साधु समाज के प्रमुख निर्मल महामण्डलेश्वर सन्त दर्शन सिंह ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा गुडगाँव स्थित ओम शान्ति रिट्रीट सेन्टर में आयोजित तीन दिवसीय अखिल भारतीय गीता वृतान्त पुनरावृत्ति महा सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में कहे। उन्होंने कहा कि निराकार परमात्मा की यही अलौकिक शिक्षा है कि अगर मानव अपने जीवन और समाज को बदतर से बेहतर बनाना चाहता है तो अपने जीवन और समाज में आध्यात्मिक ज्ञान, नीति एवं जीवन प्रणाली को लागू करे।

जबलपुर से हिन्दु दर्शन की रिसर्च स्कॉलर डॉक्टर छाया राय ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज वही भगवत गीता का धर्म युद्ध का दौर चल रहा है जिसमें आज का मानव अर्जुन की भाँति दो कर्त्तव्यों अर्थात स्वार्थ और परमार्थ के द्वन्द में उलझा हुआ है। उन्होंने कहा कि बेहतर यही है कि मानव समाज के हित में अगर व्यक्ति कार्य करे तो उसमें अपने व्यक्तिगत हित की पूर्ति हो जाती है। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी बी. के. ऊषा, माउन्ट आबू ने कहा कि शास्त्रों में वर्णित कलियुग के लक्षण आज के समाज में पूर्ण रूप में परिलक्षित हैं एवं उन्हीं शास्त्रों में निराकार परमात्मा के द्वारा प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से नई सतयुगी दुनिया के पुर्नस्थापना के उल्लेख हैं जो आज ईश्वरीय विश्वविद्यालय के माध्यम से की जा रही है।

सत्र के आरम्भ में सम्मेलन के मुख्य

शेष पेज 11 पर

ऐसे थे महान तपस्वी ...

--ब्र.कु. सूर्य, माउण्ट आबु।

स्वयं ज्ञान सागर, त्रिकालदर्शी परम आत्मा ने जिन्हें आदि पुरूष प्रजापिता ब्रह्मा कहकर सम्मानित किया। अपनी दृढ़ता, पवित्रता व तपस्या के बल से जिन्होने अनेकों को जीवन दान दिया। रूद्र द्वारा स्थापित ज्ञान-यज्ञ में जिन्होने अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया और यज्ञ पिता बनकर यज्ञ को सफल किया। जिनकी दृष्टि दूसरों को देहभान से न्यारा कर देती थी। जो विदेही स्वरूप में रहकर इस संसार में ऐसे रहे मानो यहाँ रहते ही न हों। वे देह में रहते हुए भी ऐसे रहे मानो देह में हों ही नहीं। उनके त्याग व वैराग्य की अनेक कहानियाँ यज्ञ-वत्सों में बहुचर्चित थी। ऐसे महान पुरूष थे वे जिन्हें स्वयं निराकार त्रिमूर्ति शिव ने अपना माध्यम बनाया और उनके तन में प्रवेश करके सत्य ज्ञान का रहस्योद्घाटन किया। वे 93 वर्ष की आयु में अव्यक्त हुए। इतनी आयु तक सीधे चलते थे, सीधे बैठते थे और बैडमिंटन खेलते थे। इतनी आयु में भी वृद्धावस्था के लक्षण उनके पास नहीं फटकते थे और उनकी गति को मंद नहीं करते थे। उनहोंने पवित्रता व दिव्यता की

शेष पेज ३ पर...

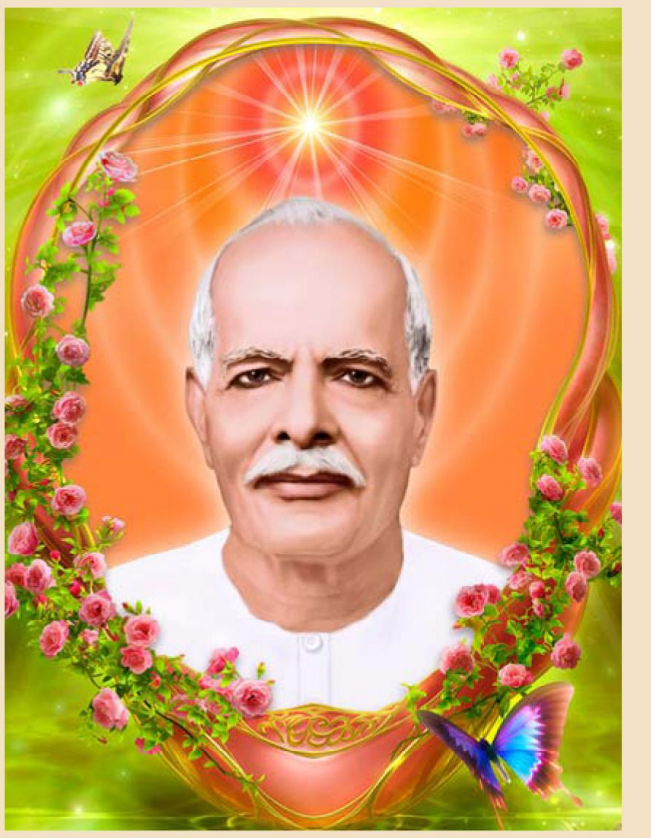

मानव में सुसंस्कारों का बीजारोपण लाएगा स्वर्णिम संसार-चौहान

मुख्यमंत्री निवास पर उनके आमंत्रण पर पधारे मध्यप्रदेश के प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के भाई-बहिनों को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने कहा कि आज मैं इस पवित्र अवसर पर बहुत खुश हूँ, आज ऐसा लग रहा है कि वास्तव में भैया दूज है। मैं आप बहिनों का बहुत सम्मान करता हूँ। एक मुख्यमंत्री का कार्य केवल सीमेंट के पुल और रोड बनाना नहीं है। जब तक मनुष्य का निर्माण नहीं होगा, तब तक स्वर्णिम मध्यप्रदेश बनाने का कार्य पूर्ण नहीं हो सकता है।

आपने आगे कहा कि मैं मुख्यमंत्री का अर्थ राजा नहीं, बल्कि सेवक हूँ। मैं मध्यप्रदेश को मंदिर मानता हूँ। जनता भगवान है उसका पुजारी शिवराज सिंह चौहान है। लोग बेटियों के पैदा होने पर अफसोस करते हैं पर मैंने मध्यप्रदेश में बेटी बचाओं अभियान ईश्वरीय प्रेरणा से चालू किया है बेटी है तो कल है। मैं मानता हूँ कि आज समाज में ज्ञान, कौशल और नागरिकता के संस्कार देने की आवश्यकता है। इसके लिए पुन: हमें आध्यात्मिक मूल्यों की ओर मुडना होगा। अपनी अंतरात्मा की आवाज को दुनिया में फैला रहे हैं। मैं आपको प्रणाम करता हूँ। विश्व में लोग आत्म हत्याएँ कर रहें हैं। अत: इस आध्यात्म के प्रकाश को फैलाने की आवश्यकता है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउण्ट आबू से पधारें मूल्य शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष भ्राता मृत्युंजय जी ने मुख्यमंत्री द्वारा चलायी जा रही कल्याणकारी योजनाओं की प्रशंसा करते हुए कहा कि अगर हम रोगमुक्त, भयमुक्त व प्रदूषण मुक्त संसार चाहते हैं तो वर्तमान शिक्षा पद्धति में मूल्य शिक्षा का समावेश मानव हित में परम आवश्यक है। अगर हमारा मन स्वच्छ है तो समाज के वातावरण को हम सुन्दर बना सकते हैं। ब्रह्माकुमारी संस्थान मध्यप्रदेश की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी अवधेश जी ने

शेष पेज 10 पर

भोपाल। दीप प्रज्जवलन करते हुऐ मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराजसिह चौहान,ब्र.कु. मृत्युजय,ब्र.कु.अवधेश, आशिष गुपता तथा अनय।